मसाइले वुज़ू
आला हज़रत इमाम-ए-अहले सुन्नत
इमाम अहमद रज़ा
रदियल्लाहो तआला अन्हो
www.jannatikaun.com

तारीख़ी नाम

तिबयानुल वुज़ू १३१४ हिजरी

मसाइले वुज़ू

तसनीफ़े लतीफ़

अअ्ला ह़ज़रत इमाम अह्ले सुन्नत मुजद्दिदे दीन-ो मिल्लत
मौलाना शाह अह़मद रज़ा क़ादिरी ﷺ

बफ़ैज

हुज़ूर मुफ़्तिए अअ्ज़म ह़ज़रत अ़ल्लामा शाह
मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा क़ादिरी नूरी ﷺ

हिन्दी कर्ता

मुहम्मद शमीम अंजुम नूरी (बी.ए.)

بسم الله الرحمن الرحيم

मस्अला मस्उला मौलवी अली अहमद साहिब मुसन्निफ़ तहज़ीबुल सुबियान १५ जमादिल ऊला १३१४ हिजरी क्या फ़रमाते हैं ओलमाए दीन इस मस्अले में कि फ़राइज़े गुस्ले जनाबत जो तीन हैं उन में मुज़मज़ा व इसतन्शाक़ व इसालतुल मा अली कुल्लिल बदन से कैसा मज़मज़ा व इस्तन्शाक़ व इसालए माअ मुराद है।

अल जवाब

मज़मज़ा सारे दहन का मअ उस के गोशे पुर्ज़े कुंज के हलक़ की हद तक धुलना। दुर्रे मुख़्तार में है :–

فرض الغسل غسل کل فمہ ردالمحتار میں ہے عبر عن المضمضۃ بالغسل لافادۃ الاستیعاب اسی میں بحرالرائق سے ہے المضمضۃ اصطلاحا استیعاب الماء جمیع الفم

आज कल बहुत बे इल्म मज़मज़े के मअ्ना सिर्फ़ कुल्ली के समझते हैं। कुछ पानी मुँह में लेकर उगल देते हैं कि ज़बान की जड़ और हलक़ के किनारे तक नहीं पहुँचता। यूँ गुस्ल नहीं उतरता न उस गुस्ल से नमाज़ हो सके, न मस्जिद में जाना जाएज़ हो बल्कि फ़र्ज़ है कि दाढ़ों के पीछे गालों की तह में दाँतों की जड़ में दाँतों की खिडकियों में हलक़ के किनारे तक

हर पुर्ज़े पर पानी बहे यहाँ तक कि छालिया वग़ैरा अगर कोई सख़्त चीज़ कि पानी के बहने को रोकेगी दाँतों की जड़ या खिड़कियों वग़ैरा में हाएल हो तो लाज़िम है कि उसे जुदा करके कुल्ली करे वर्ना ग़ुस्ल न होगा हाँ अगर उस के जुदा करने में ह़रज व ज़रर व अज़ीय्यत हो जिस तरह़ पानों की कसरत से जड़ों में चूना जम कर मुतह़जर हो जाता है कि जब तक ज़्यादा होकर आप ही जगह न छोड़े छुड़ाने के क़ाबिल नहीं होता। या औरतों के दाँतों में मिस्सी की रेखें जम जाती हैं कि उन के छीलने में दाँतों या मसूढ़ों की मज़रत का अंदेशा है तो जब तक ये ह़ालत रहेगी उस क़दर की मुआफ़ी होगी :-

فان الحرج مدفوع بالنص درمختار میں ہے لایمنع طعام بین اسنانه اوفی سنه المجوف به یفتی وقیل ان صلبا منع وھو الاصح ردالمختار میں ہے قوله به یفتی صرح به فی الخلاصه وقال لان الماء شئ لطیف یصل تحته غالبا اھ ویرد علیه ماقدمناه انفا (ای ان مجرد الوصول غیر کاف بل الواجب الاسالة والتقاطر) ومفاده (ای مفاد ما فی الخلاصة) عدم الجواز اذا علم انه لم یصل الماء تحته (ای لان غلبة الوقوع لاتعارض العلم بعدم الوقوع ھھنا) قال فی الحلیة وھو اثبت قوله وھو الاصح صرح به فی شرح المنیة وقال لامتناع نفوذ الماء مع عدم الضرورة والحرج اھ ولا یخفی ان ھذا التصحیح لاینافی ماقبله اھ ملخصا مزیدا بین الاھلة

बिल जुम्ला ग़ुस्ल में इन एहतियातों से रोज़ादार को भी चारा नहीं हाँ ग़रारा उसे न चाहिए कि कहीं पानी हलक़ से नीचे न उतर जाए। ग़ैर रोज़ादार के लिए ग़रग़रा सुन्नत है। दुर्रे मुख़्तार में है :- سنه المبالغة بالغرغرة غير الصائم لاحتمال الفساد -

उसी के बयाने ग़ुस्ल में है :- سننه كسنن الوضوء سوى الترتيب - الخ

इस्तनशाक़ – नाक के दोनों नथनों में जहाँ नर्म जगह है यानी सख़्त हड्डी के शुरू तक धुलना। रद्दुल मुहतार में बहरुर्राएक़ से है :- الاستنشاق اصطلاحا ايصال الماء الى المارن ولغة من النشق وهو جذب الماء ولنحوه بريح الانف الى داخله.

उसी में क़ामूस से है (المارن مالان من الانف)
और ये यूँ ही हो सकेगा कि पानी लेकर सूंघे और ऊपर को चढ़ाए कि वहाँ तक पहुँच जाए। लोग इस का बिल्कुल ख़याल नहीं करते ऊपर ही ऊपर पानी डालते हैं कि नाक के सिरे को छू कर गिर जाता है। बांसे में जितनी नर्म जगह है उस सब को धोना तो बड़ी बात है। ज़ाहिर है कि पानी का बिल–तबअ़ मैल नीचे को है ऊपर बे चढ़ाए हरगिज़ न चढ़ेगा। अफ़्सोस कि अ़वाम तो अ़वाम बअ़्ज़ पढ़े लिखे भी इस बला में गिरफ़्तार हैं। काश इस्तनशाक़ के लग़वी मअ़्ना ही पर नज़र करते तो इस आफ़त में न पड़ते। इस्तनशाक़ सांस के ज़रिअ़े से कोई चीज़ नाक के अन्दर चढ़ाना है न कि नाक के किनारे को छू जाना।

वुज़ू में तो ख़ैर इरा के तर्क की आदत डालने से सुननत छोड़ने ही का गुनाह होगा कि मज़मज़ा व इस्तनशाक़ ब–मअ़्ना मज़कूर दोनों वुज़ू में सुन्नते मुअ़क्कदा हैं (كما في الدر المختار) और सुन्नते मुअ़क्कदा के एक आध बार तर्क से अगरचे गुनाह न हो अ़ेताब ही का इस्तहक़ाक़ हो मगर बारहा तर्क से बिला शुब्हा गुनहगार होता है (كما في رد المختار وغيره من الاسفار) ता हम वुज़ू हो जाता है। और गुस्ल तो हरगिज़ उतरेगा ही नहीं जब तक सारा मुँह ह़लक़ की ह़द तक और सारा नर्म बांसा सख़्त हड्डी के किनारे तक पूरा न धुल जाए यहाँ तक कि ओलमा फ़रमाते हैं कि अगर नाक के अन्दर कसाफ़त जमी है लाज़िम है कि पहले उसे साफ़ करे वर्ना उस के नीचे पानी ने उ़बूर न किया तो गुस्ल न होगा।

दुर्रे मुख़्तार में है :– فرض الغسل انفه حتى ما تحت الدرن

इस एह्तियात से भी रोज़ादार को मफ़र (छुटकारा) नहीं हाँ इस से ऊपर तक चढ़ाना उसे न चाहिए कि कहीं पानी दिमाग़ को न चढ़ जाए। ग़ैर रोज़ादार के लिए ये भी सुन्नत है। दुर्रे मुख़्तार में है :– سنته المبالغة بمجاوزة المارن لغير الصائم

इसालतुल माअ़् अ़ला ज़ाहिरुल बदन

सर के बालों से तल्वों के नीचे तक जिस्म के हर पुर्ज़े रोंगटे की बैरूनी सतह़ पर पानी का तक़ातुर के साथ बह जाना सिवा उस मौज़अ़ (जगह) या ह़ालत के जिस में ह़रज हो जिस का बयान अ़न्क़रीब आता है। दुर्रे मुख़्तार में है :– يفرض كل ما يمكن من البدن بلا حرج

लोग यहाँ दो क़िस्म की बे एह्तियातियाँ करते हैं जिन से गुस्ल नहीं होता और नमाज़ें अकारत जाती हैं। अव्वलन गुस्ल बिलफ़तह् के मअ्ना में ना फ़हमी कि बअ्ज़ जगह तेल की तरह् चिपड़ लेने या भीगा हाथ पहुँच जाने पर क़नाअ़त करते हैं ह़ालाँकि ये मसह् हुआ गुस्ल में तक़ातुर और पानी का बहना ज़रूर है। जब तक एक एक ज़र्रे पर पानी बहता हुआ न गुज़रेगा गुस्ल हरगिज़ न होगा। दुर्रे मुख़्तार में है (غسل ای اسالة الماء مع التقاطر) रद्दुल मुह़तार में है (البل بلا تقاطر مسح) उसी में है (لو لم يسل الماء بان استعمله الدهن لم يجز ثانيا) तीसरा पानी ऐसी बे परवाई से बहाते हैं कि बअ्ज़ मवाज़ेअ् (जगहों) बिल्कुल ख़ुश्क रह जाते हैं या उन तक कुछ असर नहीं पहुँचता है तो वही भीगे हाथ की तरी। उन के ख़याल में शायद पानी में ऐसी करामत है कि हर कुंज व गोशा में आप दौड़ जाए कुछ एह्तियाते ख़ास की ह़ाजत नहीं ह़ालाँकि जिस्मे ज़ाहिर में बहुत मवाक़ेअ् ऐसे हैं कि वहाँ एक जिस्म की सतह् दूसरे जिस्म से छुप गई है या पानी की गुज़रगाह से जुदा वाकेअ् है कि बे लिह़ाज़े ख़ास पानी इस पर बहना हरगिज़ मज़नून नहीं, और हुक्म ये है कि अगर एक ज़र्रा भर जगह या किसी बाल की नोक भी पानी बहने से रह गई, तो गुसल न होगा। और न सिर्फ़ गुसल बल्कि वुज़ू में भी ऐसी बे एह्तियातियाँ करते हैं कहीं ऐड़ियों पर पानी नहीं बहता कहीं कुहनियों पर कहीं माथे के बालाई हिस्से पर कहीं कानों के पास, कनपटियों पर। हम ने इस बारे में एक मुस्तक़िल तह्रीर लिखी है उस में उन तमाम मवाज़ेअ् की तफ़्सील जिन का लिह़ाज़–ो ख़याल वुज़ू व गुसल में ज़रूर। मर्दों और औरतों की तफ़रीक़ और तरीक़ए एह्तियात की तह्क़ीक़ के साथ ऐसे सलीस–ो रौशन (आसान और ज़ाहिर) बयान से मज़कूर है जिसे

बिऔनिही तआला हर जाहिल बच्चा औरत समझ सके। यहाँ इजमालन इन का शुमार करते हैं।

ज़रूरियाते वुज़ू मुतलक़न

औरतों और मर्दों के वो ७० हिस्से कि वुज़ू में जिन पर पानी बहाने का खास लिहाज़ लाज़िम है लोग उन में बेखयाली करके नमाज़-ो तहारत बरबाद करते हैं।

यानी मर्द व औ़रत सब के लिए।

(१) पानी माँग यानी माथे के सिरे से पड़ना बहुत लोग लुप या चुल्लू में पानी ले कर नाक या अबरू या निस्फ़ माथे पर डालते हैं, पानी तो बह कर नीचे आया वो अपना हाथ चढ़ा कर ऊपर ले गए। इस में सारा माथा न धुला भीगा हाथ फिरा और वुज़ू न हुआ।

(२) पट्टियाँ झुकी हों तो उन्हें हटा कर पानी डाले कि जो ह़िस्सा पेशानी का उन के नीचे है धुलने से न रह जाए।

(३) भवों के बाल छिदरे (कम हों) कि नीचे की खाल चमकती हो तो खाल पर पानी बहना फ़र्ज़ है सिर्फ़ बालों पर काफ़ी नहीं।

(४) आँखों के चारों कोने। आँखें ज़ोर से बन्द न करे यहाँ कोई सख़्त चीज़ जमी हो तो छुड़ाले।

(५) पलक का हर बाल पूरा बअ़्ज़ वक़्त कीचड़ वग़ैरा सख़्त हो कर जम जाता है कि उस के नीचे पानी नहीं पहुँचता उस का छुड़ाना ज़रूर है।

(६) कान के पास तक कनपटी ऐसा न हो कि माथे का पानी गाल पर उतर जाए और यहाँ सिर्फ़ भीगा हाथ फिरे।

(७) नाक का सूराख़ अगर कोई गहना पहना या तिन्का हो

तो उसे फिरा फिरा कर वर्ना यूँ ही धार डाले हाँ अगर बिल्कुल बन्द हो गया हो तो हाजत नहीं।

(८) आदमी जब ख़ामोश बैठे तो दोनों लब मिल कर कुछ हिस्सा छुप जाता कुछ ज़ाहिर रहता है। ये ज़ाहिर रहने वाला हिस्सा धुलना भी फ़र्ज़ है अगर कुल्ली न की और मुँह धोने में लब समेट कर ब–ज़ोर बन्द कर तो उस पर पानी न बहेगा।

(९) ठोड़ी की हड्डी उस जगह तक जहाँ नीचे के दाँत जमे हैं।

(१०) हाथों की आठों गाइयाँ।

(११) उंगलियों की करवटें कि मलने में बन्द हो जाती हैं।

(१२) दसों नाख़ुनों के अन्दर जो जगह ख़ाली है। हाँ मैल का डर नहीं।

(१३) नाख़ुनों के सिरे से कुहनियों के ऊपर तक हाथ का हर पहलू। चुल्लू में पानी लेकर कलाई पर उलट लेना हरगिज़ काफ़ी नहीं।

(१४) कलाई का हर बाल जड़ से नोक तक, ऐसा न हो कि खड़े बालों की जड़ में पानी गुज़र जाए नोकें रह जाएँ।

(१५) आरसी, छल्ले और कलाई के हर गहने के नीचे।

(१६) औरतों को फँसी चूड़ियों का शौक़ होता है उन्हें हटा हटा कर पानी बहाएँ।

(१७) चौथाई सर का मसह फ़र्ज़ है पोरों के सिरे गुज़ार देना इस मिक़्दार को काफ़ी नहीं।

(१८) पाँव की आठों घाइयाँ।

(१९) यहाँ उंगलियों की करवटें ज़्यादा क़ाबिले लिहाज़ हैं कि क़ुदरती मिली हुई हैं।

(२०) नाख़ुनों के अन्दर कोई सख़्त चीज़ न हो।

(२१) पाँव के छल्ले और जो गहना गट्टों पर या गट्टों से नीचे हो उस के नीचे सैलान शर्त है।
(२२) गट्टे।
(२३) तलवे।
(२४) ऐड़ियाँ।
(२५) कूंचें।

मर्दों के लिए ख़ास

(२६) मूंछें।
(२७) इस मज़हब में सारी दाढ़ी धोना फ़र्ज़ है यानी जितनी चेहरे की हद में है न लटकी हुई कि हाथ से गले की तरफ़ को दबाओ तो ठोड़ी के उस हिस्से से निकल जाए जिस पर दाँत जमे हैं कि इस का सिर्फ़ मसह सुन्नत और धोना मुस्तहब है।
(२८,२९) दाढ़ी मूंछें छिदरी (कम बाल) हों कि नीचे की खाल नज़र आए तो खाल पर पानी बहना।
(३०) मूंछें बढ़कर लबों को छुपालें तो उन्हें हटा हटा कर लबों की खाल धोनी अगरचे मूंछें कैसी ही घनी हों।

दुर्रे मुख़्तार में है :- اركان الوضوء غسل الوجه من مبدء سطح جبهته الى منبت اسنانه السفلى طولا ومابين شحمتى الاذنين عرضا فيجب غسل الميا قى وما يظهر من الشفة عند انضمامها بشدة وتكلف اهـ ح وكذا لوغمض عينيه شديدا لايجوز بحر) وغسل جميع اللحية فرض على المذهب الصحيح المفتى به المرجوع اليه وماعدا هذه الرواية مرجوع عنه ثم لاخلاف ان المسترسل (وفسره

ابن حجر فی شرح المنهاج بما لو مد من جهة نزوله نخرج عن دائرة الوجه ثم رأيت المصنف فی شرحه علی زاد الفقير قال وفي المجتبى قال البقالی وما نزل من شعر اللحية من الذقن ليس من الوجه عندنا خلافا للشافعی اه) لا يجب غسله ولا مسحه بل يسن (المسح) وان الخفيفة تری بشرتها يجب غسل ما تحتها نهر وفی البرهان يجب غسل بشرة لم يسترها الشعر كحاجب وشارب وعنفقة فی المختار ويستثنى منه ما اذا كان الشارب طويلا يستر حمرة الشفتين لما فی السراجية من ان تخليل الشارب الساتر حمرة الشفتين واجب اه ملخصا مزيدا ما بين الاهلة من رد المحتار قلت واستحبابی غسل المسترسل الی خلاف الامام الشافعی رضی الله تعالیٰ عنه لما نصوا عليه من ان الخروج عن الخلاف مستحب بالاجماع ما لم يلزم منه ارتكاب مكروه مذهبه كما فی رد المحتار وغيره۔

उसी में है :- سنته تخليل اصابع اليدين والرجلين وهذا بعد دخول الماء خلالها فلو منضمة فرض۔

उसी में है :- مستحبه تحريك خاتم الواسع وكذا الضيق ان عار وصول الماء والا فرض۔

उसी में है :- ومن الآداب تعاهد مرقيه وكعبيه وعرقوبيه واخمصيه اه قلت وهذا ان كان الماء يسيل عليها وان لم يتعاهد والا فرض كنظائره المارة۔

ज़रूरियाते ग़ुस्ले मुतलक़न

ज़ाहिर है कि वुज़ू में जिस जिस उज़्व का धोना फ़र्ज़ है ग़ुस्ल में भी फ़र्ज़ है तो ये सब अशिया यहाँ भी मुअ़्तबर और उन के इ़लावा ये और ज़ाएद।

(३१) सर के बाल कि गुँधे हुए न हों। हर बाल पर जड़ से नोक तक पानी बहना।

(३२) कानों में बाली पत्ते वग़ैरा ज़ेवरों की सूराख़ का ग़ुस्ल में वही हुक्म है जो नाक में बुलाक़ वग़ैरा के छेद का ग़ुस्ल व वुज़ू दोनों में था।

(३३) भवों की खाल अगरचे बाल घने हों।

(३४) कान का हर पुर्ज़ा उस के सूराख़ का मुँह।

(३५) कानों के पीछे के बाल हटा कर पानी बहाए।

(३६) इस्तनशाक़ बमअ़ना मज़्कूर।

(३७) मज़मज़ा ब-तर्ज़ मस्तूर।

(३८) दाढ़ों के पीछे।

(३९) दाँतों की खिड़कियों में जो सख़्त चीज़ हो पहले जुदा कर लेना।

(४०) चूना रीख़ें वग़ैरा जो बे ईज़ा छूट सके छुड़ाना।

(४१) ठूड़ी और गले का जोड़ कि बे मुँह उठाए न धुलेगा।

(४२) बग़लें बे हाथ उठाए न धुलेंगी।

(४३) बाज़ू का हर पहलू।

(४४) पीठ का हर ज़र्रा।

(४५) पेट वग़ैरा की बिलटें उठाकर धोएँ।

(४६) नाफ़ उंगली डाल कर जबकि बिग़ैर इस के पानी बहने में शक हो।

(४७) जिस्म का कोई रोंगटा खड़ा न रह जाए।

(४८) रान और पेडू का जोड़ खोल कर धोएँ।

(४९) दोनों सुरीन मिलने की जगह खुसूसन जब खडे हो कर नहाएँ।

(५०) रान और पिन्डली का जोड जबकि बैठ कर नहाए।

(५१) रानों की गोलाई।

(५२) पिन्डलियों की करवटें।

मर्दों के लिए ख़ास

(५३) गुंधे हुए बाल खोल कर जड़ से नोक तक धोना।

(५४) मूंछों के नीचे की खाल अगरचे घनी हों।

(५५) दाढ़ी का हर बाल जड से नोक तक।

(५६) ज़कर अनीसीन (शर्मगाह) के मिलने की सतहें कि बे जुदा किए न धुलेगी।

(५७) अनीसीन की सतहे ज़ेरीं (नीचे) जोड़ तक।

(५८) अनीसीन के नीचे की जगह जड़ तक।

(५९) जिस का खतना न हुआ हो बहुत ओलमा के नज़दीक उस पर फ़र्ज़ है। कि खाल चढ़ सकती हो तो हशफा खोल कर धोए।

(६०) इस कौल पर उस खाल के अन्दर भी पानी पहुँचाना फ़र्ज़ होगा बे चढ़ाए उस में पानी डाले कि चढ़ने के बाद बन्द हो जाएगी।

औ़रतों के लिए ख़ास

(६१) गुंधी चोटी में हर बाल की जड़ तर करनी चोटी खोलनी ज़रूर नहीं मगर जब ऐसी सख़्त गुंधी हो कि बे खोले जडें तर न होंगी।

(६२) ढली हुई पिस्तान उठा कर धोनी।

(६३) पिस्तान–ो शिकम के जोड की तहरीर।

(६४ ता ६७) फ़ुर्ज (शर्मगाह) खा़रिज की चारों लबों की जेबें जड़ तक।

(६८) गोश्त पारए बाला का हर परत कि खोले से खुलेगा।

(६९) गोश्त पारए जे़रीं की सतहे जे़रीं।

(७०) इस पारे के नीचे की खा़ली जगह। गर्ज़ फ़ुर्जे़ खा़रिज के हर गोशे पुर्जे़ कुंज का खयाल लाज़िम है हाँ फ़ुर्जे़ दाखिल के अन्दर उंगली डाल कर धोना वाजिब नहीं बेह्तर है।

दुर्रे मुख़्तार में है। يفرض غسل كل ما يمكن من البدن بلا حرج مرة كاذن وسرة وشارب وحاجب (اى بشرة وشعرا وان كثف بالاجماع كما فى المنية) ولحية وشعر راس ولو متلبد او فرج خارج لانه كالفم لا داخل ولا تدخل اصبعها فى قبلها به يفتى (اى لا يجب ذالك كما فى الشرنبلالية و فى التتارخانية وعن محمد انه ان لم تدخل الاصبع فليس بتنظيف) لا داخل قلفة بل يندب هو الاصح قاله الكمال وعلله بالحرج وفى المسعودى ان امكن فسخ القلفة بلا مشقة يجب والا لا وكفى بل اصل ضفيرتها للحرج اما المنقوض غسل كله ولو لم يبتل اصلها يجب نقضها هو الصحيح لا يكفى بل ضفيرته فينقضها وجوبا ولو علويا او تركيا لامكان حلقه (هو الصحيح) اه ملخصا مزيدا من الشافى۔

उसी में है :- من اٰدابه تحریك القرط ان علم وصول الماء والا فرض

خاتمه ضیقا نزعه او حرکه وجوبا کقرط ولو لم یکن بثقب اذنه قرط فدخل الماء فی الثقب عند مروره علی اذنه اجزأه کسرة واذن دخلهما الماء والا یدخل ادخله ولو باصبعه ولا یتکلف بخشب ونحوه والمعتبر غلبة ظنه بالوصول۔

बिल जुमला तमाम ज़ाहिर बदन का हर ज़र्रे हर रोंगटे पर से पाँव तक पानी बहना फ़र्ज़ है वर्ना गुस्ल न होगा।

वो जगहें जो पानी बहाने से ब-वजहे हरज मुआफ़ हैं

(१) आँखों के ढेले।

(२) औरत के गुंधे हुए बाल।

(३) नाक कान के ज़ेवरों के वो सूराख़ जो बन्द हो गए।

(४) ना मख़्तून (जिसका ख़तना न हुआ हो) का हश्फ़ा जबकि खाल चढ़ाने में तकलीफ़ हो।

(५) इस हालत में उस खाल की अन्दरूनी सतह जहाँ तक पानी बे खोले न पहुँचे और खोलने में मशक़्क़त हो।

(६) मक्खी या मच्छर की बीट जो बदन पर हो उस के नीचे

(७) औरत के हाथ पाँव में अगर कहीं मेंहदी का जर्म लगा रह गया।

(८) दाँतों का जमा हुआ चूना।

(९) मिस्सी की रीखें।

(१०) बदन का मैल।

(११) नाखुनों में भरी हुई या बदन पर लगी हुई मिट्टी।

(१२) जो बाल खुद गिरह खा कर रह गया हो। अगरचे मर्द के बदन का। दुर्रे मुख़्तार में है :– لايجب غسل ما فيه حرج كعين وان اكتحل بكحل نجس وثقب انضم وداخل قلفة وشعر المرأة المضفور ولا يمنع الطهارة خرء ذباب وبرغوث لم يصل الماء تحته (لان الاحتراز عنه غير ممكن عليه) وحناء ولو بجرمه به يفتى ودرن ووسخ وتراب وطين ولو في ظفر مطلقا قرويا او مدنيا في الاصح وما على ظفر صباغ اھ ملخصا۔ ا يوخذ من مسئلة الضفيرة انه لا يجب غسل عقد الشعر المنعقد بنفسه لان الاحتراز عنه غير ممكن ولو من شعر الرجل ولم ار من نبه عليه من علمائنا تامل اقول وبالله التوفيق

हरज की तीन सूरतें हैं एक ये कि वहाँ पानी पहुँचाने में मुज़रत हो जैसे आँख के अन्दर। दुव्वम मशक्क़त हो जैसे औरत की गुंधी चोटी। सुव्वम बाद इल्म–ो इतलाअ़ कोई ज़रर व मशक़्क़त तो नहीं मगर उस की निगहदाश्त उस की देख भाल में वक़्त है जैसे मक्खी मच्छर की बीट या उल्झा हुआ गिरह खाया हुआ बाल। क़िस्म अव्वल व दुव्वम की मुआफ़ी तो ज़ाहिर और क़िस्म सुव्वम में फ़क़ीर गुमान करता है कि बाद इत्तलाअ़ इज़ाल–ए–मानेअ़ ज़रूर है मसलन जहाँ बीट या मेहंदी जमी हुई देख पाए तो अब ये न हो कि उसे यूँ ही रहने दे और पानी ऊपर से बहा दे बल्कि छुड़ा ले कि आख़िर इज़ाले में तो कोई ह़रज था ही नहीं तआ़बुद में था बाद इतलाअ़ इस की ह़ाजत न रही।

मुहम्मदी सुन्नी हनफ़ी क़ादिरी १३०१ हिजरी
अ़ब्दुल मुस्तफ़ा अहमद रज़ा ख़ान